SHRI K.K. RAGESH (Kerala): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI K. SOMAPRASAD (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI ELAMARAM KAREEM (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member .

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री पी.एल. पुनिया (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

Concern over Growing 'Gun Culture' in the country

SHRI NARESH GUJRAL (Punjab): Sir, it is highly distressing and depressing to note how a new kind of ' gun culture' has started pervading our lives. Hardly a day goes by, when you do not hear in the media about gunshots being fired either by gangsters at police or by somebody in road rage case, or, by kidnappers.

Sir, ours is the land of Buddha, the land of great Gurus and the land of great Mahatma who taught us the spirit of non-violence but the way guns are now seen everywhere in the country, both licensed or un-licensed, and, the way they are being used with impunity, we need to think about it and do something about it.

I know, it is a State Subject but I feel that the Centre should make some kind of a model law which should be circulated to the States, and, in the next Centre-States meeting, this issue should be taken up. The way we are going, it is becoming very dangerous for ordinary persons in the country.

Sir, this morning, for example, I read about a BJP leader being shot; two days ago, a Congress spokesperson was shot; earlier, the Bar Association chief in Agra was shot down. Sir, the problem is that it is a failure of policing. Guns have come into our lives because people demand guns for safety and security, but this is the role of the police. I hope that the Government will hear my voice and usher in some police reforms urgently also because we must put an end to this gun culture.

Safety measures for labourers at construction sites

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से संबंधित मंत्री जी का ध्यान एक अत्यंत ही हृदयविदारक दुर्घटना की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं।

बीते दिनों पुणे में 15 मजदूर मर गए। मैं मानता हूं कि उनकी मौत मानव-निर्मित है, प्राकृतिक नहीं है, क्योंकि किसी भी बहुमंजिली इमारत और खूबसूरत बिल्डिंग के नीचे अगर हम देखेंगे तो पाएँगे कि

वहाँ सीमेन्ट, गारा और मिट्टी के साथ किसी मजदूर का न सिर्फ पसीना है, बल्कि खून भी है। हमारा मानना है कि safety regulations, safety measures, safety audit, they are more observed in violations rather than in compliance. Sir, there are certain cities we know, we can analyse the Labour footfall, and make sure that there are workers hostelst *i.e. shramik vas,* across India in those cities, and, as far as working conditions are concerned, we have to make sure that if the safety regulations or safety manual is violated by somebody - - no matter the stature of the builder or the political connections he has - - he must be made to pay for committing these crimes which are going unabated. Certain companies have shown that accident-free workstations are possible. Can' t we do that? That would be a minimum of what we can do for the working-class population. Thank you, Sir.

PROF. M.V. RAJEEV GOWDA (Karnataka): Sir, I associate myself with the mention made by the hon. Member.

SHRI JOSE K. MANI (Kerala): Sir, I also associate myself with the mention made by the hon. Member.

SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the mention made by the hon. Member.

श्री सैयद नासिर हुसैन (कर्नाटक): सभापति महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

श्री हुसैन दलवई (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

डा. संजय सिंह (असम): सभापति महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली) : सभापति महोदय मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबंद्ध करता हूं।

श्री नारायण दास गुप्ता (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली): सभापति महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

श्री सभापति: मंत्री जी कुछ respond करना चाहते हैं।

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री (श्री प्रकाश जावडेकर): सर, मैं कल पुणे में था और इसमें जो ज़ख्मी लोग हॉस्पिटल में हैं, जिनका आज ऑपरेशन हो रहा है, मैंने उनसे मुलाकात की है। इसमें दो responsible builders को गिरफ्तार किया गया है, सभी क्षेत्रों के एक्सपर्ट्स और अधिकारियों की कमेटी नियुक्त की गई है, सारी बॉडीज़ को एयरफोर्स की स्पेशल फ्लाइट से पहुंचाया गया है और सबको जो 5-5 लाख रुपये की क्षति पूर्ति राशि देनी है, उसके लिए बिहार के कलेक्टर्स को निर्देश दिया गया है कि वे जल्दी नाम authenticate करके भेजें...

श्री सभापति: मंत्री जी, जनरल पॉलिसी के बारे में बताइए।

श्री प्रकाश जावडेकर: महोदय, इसमें जनरल पॉलिसी यह है कि यह एकदम सच है कि खासकर वे मज़दूर जो construction का काम करते हैं, उनके रख-रखाव के नियमों को और कड़ा करना चाहिए। मैं वहां भी अधिकारियों के साथ मीटिंग करूंगा, लेकिन हम संबंधित मंत्रालयों को भी लिखेंगे। ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: आपके पास इतना अनुभव है, आप ऐसा करेंगे। हमारे हुसैन दलवई जी को हर एक विषय पर कुछ न कुछ बोलना है। आप पढ़कर आते हैं, किंतु हर एक सदस्य को हर एक दिन बोलने का मौका नहीं मिलेगा, आपको यह बात समझनी चाहिए।

Direct rail route between Hubli and Belagavi

डा. प्रभाकर कोरे (कर्नाटक): सभापति महोदय, कर्नाटक में एक ही ट्रेन की लाइन ऐसी है, जो बेंगलुरु से पुणे जाने के लिए करीब 22 डिस्ट्रिक्ट्स से पास होती है, लेकिन जब Dharwad से Belgaum आने की दूरी सिर्फ 70 किलोमीटर है, जिसको तय करने के लिए 3 घण्टे का समय ट्रेन लेती है, क्योंकि वह रास्ता जंगल में Dandeli से Goa border तक जाता है, वहां कम से कम 80 curves हैं, आप कार से Dharwad से Belgaum एक घण्टे में क्रॉस कर सकते हैं, लेकिन ट्रेन से 3 घण्टे का समय लगता है, जो महाराष्ट्र के पुणे तक नॉर्दन कर्नाटक कनेक्शन है, इस कनेक्शन की ट्रेन भी बहुत लेट होती है। यह रास्ता पहले के ज़माने में लकड़ी का ट्रान्सपोर्ट करने के लिए बनाया गया था, आज 80 curves लेकर तीन घण्टे का समय लगता है। हमें डायरेक्ट लाइन के लिए कहते हुए बहुत दिन हो गए हैं। Dharwad से Belgaum तक 60 किलोमीटर के लिए डायरेक्ट लाइन और उधर से Kolhapur to Karad *via* Nipani तक लाइन से पुणे जाने के लिए कम से कम 5-6 घण्टे का समय बचता है। भारत को स्वतंत्र हुए 70 वर्ष हो गए, आज तक यह छोटा सा काम, जो लाइन को डायरेक्ट करने के लिए है, जिसकी इतनी डिमांड है, दो बार सर्वे भी किया गया है, सर्वे होता है, लेकिन काम नहीं होता है। इस काम को करने के लिए हर साल बोला जाता है कि हम बजट में इसके लिए प्रावधान करते हैं, लेकिन अभी तक काम नहीं हुआ। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि 70 किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए 3 घण्टे का समय आज के नए ज़माने में बहुत ज्यादा है, इसलिए समय की बचत के लिए एक डायरेक्ट लाइन होनी चाहिए। यह मैं आपके माध्यम से सरकार से पूछना चाहता हूं।

श्री सभापति: धन्यवाद।

श्री अमर शंकर साबले (महाराष्ट्र): सभापति महोदय, मैं स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

SHRI SAMBHAJI CHHATRAPATI (Nominated): Sir, I also associate myself with the mention made by the hon. Member.

SHRI VINAY DINU TENDULKAR (Goa): Sir, I also associate myself with the mention made by the hon. Member.

Inlcusion of Pinakini Satyagraha Ashram in Andhra Pradesh under the Gandhi Heritage Sites Mission

SHRI PRABHAKAR REDDY VEMIREDDY (ANDHRA PRADESH): Mr. Chairman, Sir, I wish to draw the attention of the House to Pallipadu village which has got a Gandhi Ashram. I have adopted this village under SAGY. Gandhiji had inaugurated this in 1921. This museum or ashram is in dilapidated condition. In fact, they tried to convert it into a museum. But that is also in a dilapidated condition. This centre in Pallipadu village played an important role in the Quit India Movement and freedom struggle. I request the hon. Minister of Culture to consider this. This is on the banks of the Penna river, which is the